

संशोधनी दृष्टि

ओक भक्तकरि पोताना परम अद्विभाजन पुरुषनी परम शांतिमय आदृतितुं नर्थन करतां कहे छे के—

“यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्मिभुवनैकललामभूतं।

तावन्त पव स्तु तेऽप्यणवः पृथ्वीव्यां
यत् ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२

(भक्तामरस्तोत्र)

आवार्थः : हे नाथ! ताइ' इप परमशांतिमय छे, करण्य-रस्ती तरणेला छे अने तारा जेनी परमसौभ्य अने करण्याभ्यु आदृति भीने क्यांय जेना भणती नथी. करण्य के जगतमां जेटलां जेटलां परमशांतिमय परमाणुओं हातां ते अधां ज तारी आदृतिना निर्माणमां ज भर्याँ गयां छे. हवे एवो परमशांतिमय ओक परमाणु भयेक नथी के जेनाथी तारा जेनी भीजु परमशांतिमय आदृतितुं निर्माण थध शके गाटे ज आ आभा जगतमां तारा जेवुं परमशांतिमय इप अने परमसौभ्य आदृति दीहामां आवती नथी.

उक्त स्तुतिवाक्यने वांची वा सांख्या डेढ अरेखर ज ओम कहेवा तैयार थाय के 'हवे जगतमां ओक पणु अणु परमशांतिमय-इपना निर्माणु गाटे भयेक नथी अने एयां जेटलां जेटलां आणुओं हातां ते अधां ज भगवानना परमसौभ्यदेपना निर्माणुमां ज अपी गयां छे अने ओम छे गाटे ज भगवाननी अराहर सरणी परमशांतिमय भीजु आदृतितुं निर्माणु केम थध शके? न थध शके तो एती डेढ भीजु आदृति न हेहाय ए तदन स्वाभाविक छे—आ रीते स्तुतिवाक्यना शब्दमांथी नीकलता केवण वाच्य अर्थने ज जे प्रधान समजे अने ते ज प्रभाषे प्रतिपादन पणु इरे ते भनुप्य, साहित्यनी भाषाने समजतो ज नथी अथवा तेनामां परस्तुना स्विपने पृथक्करणु सये समजवा जेटली संशोधन-दृष्टि नथी अने ओम छे तेथी ज ते, भगवानना रथूक्षिपमां ज पोतानी दृष्टिने अटकावी भगवानने लगतो अरो परमार्थ समजवा तैयार थध शकतो नथी अने तेम इरतो ते, सत्यने बद्दवे अधं सत्यने मूजवा तैयार थयेक छे जेथी धर्षीवार श्रवनविकासने बद्दवे ज्ञवनो धूस ज थवा इरे छे. ओक अनुभी पुरुषे गायुं छे के—

“जे जिनहेहु प्रभाणुने समवसरण्यादि सिद्धि
वर्णन समजे जिनतुं रेकी रहे निज भुद्धि गा।

अस्तु.

हवे आपणे अही ए विचार प्रस्तुन छे के उक्त स्तुतिवाक्यनो केवण वाच्यार्थ केम न घटे? अने साहित्यनी भाषामां अलंकारिक अर्थं शा गाटे भानवो?

उपर्युक्त स्तुतिवाक्य आहिनाथ भगवाननी स्तुतिःप छे. केवण अही तेना वाच्यार्थ ज वेदगां आवेतो भीजु वेवीश तीर्थं करेनां पणु परमशांतिमयइप छे तेमतुं निर्माणु शी रीते थशे? अथवा जेटला जेटला वीतरागपुण्येना जगतमां थध गया छे, थय छे-विद्यमान छे, अने थनारा छे ते तमाभनी आदृति परमशांतिमयी ज हेय छे एटेके तेमनी ए आदृतितुं पणु निर्माणु शी रीते थशे? अही वाच्यार्थने ज लेतां आ रीते गेवा विशेष उभा थाय छे. गाटेज अही तेना वाच्यार्थने न लेतां साहित्यनी भाषामां तेने अलंकार अर्थं भानीते ज वाच्यवुं जेहामे अने इव्यतो अर्थं एटेके ज समजवो जेहामे के आहिनाथ भगवानतुं इप परमशांतिमयी मुद्रावाणुं हतुं. आ सिवाय ए स्तुतिवाक्यनो भीजे केढ अर्थं न ज संभवी शके. वस्तुस्थिति आवी ज छे छतां जे पेली परमाणुनाली हडीकतने ज पकडी राखे अने शब्दशः अरेखरी ज समजे तो ते भाटे ओम कहेवुं जहरी छे के एवा झाडी पकड राखनारमां सत्य पारभगा जेटली संशोधन-दृष्टि ज नथी.

शात्रमां के सूतमां आवी डांध ओक ज हडीकत नथी आवती, आवी आवी अलंकारभयी भाषामां लभ्यायेली सेंकडो हडीकतो नेंधायेली छे, जेमांनी केटवीक तो एवी अद्भुत रसमय छे के भीजे अजैन वाच्यार तो तेवी हडीकतने पुराणेनी हडीकतोनी हरेणामां भूमी केवण गांडपण्यारेली कहे तो नवाई न हडीवाय. एवी सर्वं हडीकतो अहीं कहेवा न ऐसाय; परंतु तेमांनी एक्षां ए ने वानडीझेअ अहीं रजु कर्वी जहरी छे.

इपसूत्र संभवानां तेनी दीधामां ज नेंधायेली आवी अनेक हडीकतो आपणु सांभव्यामां वारंवार आव्या इरे छे. मेडेप, गर्भापणार, वारेवारे हृद्रतुं आगमन, रात्रीमे देवदृत जन्माभिषेक, इण्ठेना भापतुं वर्णन अने चौपूवेने लभ्या गाटे शाळीना परिमाणु वर्णन वर्णन वगेरे. आमांनी अहीं छेल्वी ज ए हडीकतो विषे लभ्या धारेल छे, भीजु हडीकतो विषे वणी अवसरे जळू लभ्याशे.

भगवानना जन्माभिषेक, प्रसंगे वपरायेला कणेशातुं परिमाणु अने संप्या विशे खुलासो इरतां दीक्षाकार ओक गाथा आ प्रमाणे ठांडे छे.

“पणवी सजोङ्गणुतुंगो बारस जोअणाइं विव्यादो।
जोअणमेगं नालुअ इगकोडी सट्टिलक्खाइं ॥”

(इपसूत्र-भगवाननो जन्माभिषेक)

आवार्थः— अभिषेक वधते देवोंवे वापरेक्षो ओक ओक कणश पच्यीश येजन एटेसे गाउ लांचो, बार येजन एटेसे अडताणीश गाउ पहेजो. अने ते देवेक कणशतुं नालायुं ओक योजनतुं एटेसे चार गाउतुं. (आ नालायुं चार गाउतुं पहेजों उं क्लांयुं तेनो खुलासो भज्यो नथी.) आवा आवा ओक ए कणश नहीं पणु ओक केंड अहुं साठ लाख कणश समजवाना छे.

जेनशात्रमां अने भीजु शात्रेमां पणु पांडित गाटे युध शब्द वपरायेलो छे अने हेवो गाटे विषुध शब्द वपरायेल छे. युध करतां जेनागां विशेष विवेक हेय तेने विषुध हडीवाय ए वात सुविहित छे. भगवाननो जन्म थतां प्रथम हेवो तेमने जन्माभिषेक रात्रे ज इरे छे. ताण्युं जन्मेलु भानवी भाणक प्रथम विस्ते ओक वासातुं हडीवाय छे ए रीते वासाना अगड़इप भद्रावीरनो अभिषेक. करवा साठ केटलुं पाणी अपेक्षित हेय ए विषुधो, युधो. करतां वधारे विचारी शके छे. वणी, ओक वासातुं भाणकनी शी रिथति थापी ए भीजु वात. योथी वात ए छे के आटका वधा पाणीनो. आवो निरर्थक व्यय करनारा ए विषुधो. केवा हशो? सो गाउ लांचो अने अडताणीश गाउ पहेजो एक कणश एटेसे शुं अर्थात् एवा ओक कणशनी सरभाभणु मुंभाधनी पटीमां आवेला अरणी समुद्र साये करी शक्य अथवा सरभाभणुमां ए अरणी समुद्र केवाय नानो पणु पडे ज्यारे ओक कणश ओक अरणी समुद्रनी हेडो हेय अने एवा एवा ओक करेड अने साठ लाख कणश भेगा थाय त्यारे ए वाणी पाणी केटलुं?

ओ कलशों तो भेद्या भेद्या पहाड़ लेवा उंचा ज होय-आ अहुं विचारतां आ गाथा-नो अक्षरार्थ ज स्थाने समझों तो विष्णुधोनी खुधितुं हेवाणुं ज नीकल्युं कहेवाय अने आ अभिषेकमां विवेक तो तथाहुं ज गयेवो भासे एवुं छे. त्यारे आ गाथा-नो अक्षरार्थ न लेनां अनो लक्ष्यार्थ देवो जरुरी छे. अने ते द्वारा अम जाणी शक्य क भगवाननो जन-मालिषेक हेवोओ धणुं ज धामधूमधी उन्वेले. आ सिवाय आथा वधारे ओ गाथामांथी कहुं ज न नीकणी शडे. पुराणोंमां जे एवी अनेक वानो भणे छे तेनी सरभा-भणीमां आ कलशोनी वातने पथु भूमि शक्य. पुराणोनी वातने कविवाणी कहुने अक्षवी शक्य तो आ कलशोनी हड्डित पथु एवी ज कविवाणी छे भाटे आत्मार्थी सत्यशोधक संशोधनदृष्टिनो विशेष विवेकथी उपेतोग करी एवी कविवाणीमांथी सत्यने तारवी कहुं ज धरे अने आ गाथा देवण भगवाननो महिमा वधारनारी छे अने कवि समयमां जे जननी अतिशयेकितने अलंकारपे वर्णवेत छे ते करतां आ गाथानी अतिशयेकितने तो तहन कविस-मयनी हड्डने वयाणी जय अनी छे पेतानी तीक्ष्ण खुधिथी समज देवाणुं छे.

हवे ओ ज कल्पसन्तनी दीक्षामां “पुरुषविश्वासे वचनविश्वासः” ओ वातने समझतां योह पूर्वोनां नामो अने तेमने लभ्यना साझ डेट्ली शाही वपराय एतुं परिमाणु पथु एक पुराणी रीत प्रभाणे आ प्रभाणे जणेवेल छे. प्रथमपूर्व लभ्यतां एक हाथीना वजन नेट्ली शाही वपराय छे, जीनपूर्व भाटे ए हाथीना वजन नेट्ली अने जे रीते हड्डे पूर्व भाटे व्यभाणु व्यभाणु हाथीना वजन नेट्ली शाही वपराय छे. अनो डाहो ए दीक्षामां आ प्रभाणे आपेक्ष छे.

१ कृपाद्वृष्ट	२ अथायण्डीय	३ वीर्यप्रवाद
एक हाथीना वजन नेट्ली शाही	जे हाथीना वजन नेट्ली शाही	चार हाथीना वजन नेट्ली शाही
४ अस्तिप्रवाद	५ शान्तप्रवाद	६ सत्यप्रवाद
आठ हाथीना वजन नेट्ली शाही	सोण हाथीना वजन नेट्ली शाही	अनीश हाथीना वजन नेट्ली शाही
७ आत्मप्रवाद	८ कर्मप्रवाद	९ प्रत्याख्यानप्रवाद
६४ हाथीना वजन नेट्ली शाही	१२८ हाथीना वजन नेट्ली शाही	२४६ हाथीना वजन नेट्ली शाही
१० विद्याप्रवाद	११ कहयाणु	१२ प्राणावाय
५१२ हाथीना वजन नेट्ली शाही	१०२४ हाथीना वजन नेट्ली शाही	२०४८ हाथीना वजन नेट्ली शाही
१३ कियाविशाल	१४ लोकपिंडुसार	१५३८३ हाथीना
४०८६ हाथीना वजन नेट्ली शाही	८१८२ हाथीना वजन नेट्ली शाही	वजन नेट्ली शाही

आ हड्डित पथु अनहु अतिशयेकितां भरेली छे. पहेलुं तो जे नक्की थवुं जेहुं के पूर्वो ए शुं छे ? जेनां डेवन न में ज रम्भितां रही गयां छे अने तेमने तमाम विषय सर्वथा नाश पामी गयेक्ष छे अने ते पथु महापीर निर्विष्ट अपी लगभग तथ चार सैकागां ज. अमने तो आ शाहीनी ज वात याह रही गध अने धीन्जुं कशुं ज याह न रह्युं ए एक भार अद्भुत भीना कहेवाय, “पूर्व” शब्द “पहेलाणा” भानने सूचवे छे. एटेक्ष ए विशे एवुं कांध ए शण्वधारा रही शक्य के केह प्राचीन राख्यो हड्डो. कहाय ए पार्श्वनाथ-भगवाननी परंपरानां शख्यो होय वा तेथी पथु आगानी जैन परंपरानां शख्यो होय. हवे

श्री मुंबाई जैन युवक संघ भाटे तंत्रो मुद्रक प्रकाशक: श्री. भणिलाल भेडमचंद शाह, ४५-४७ धनजु रँडीट, मुंबाई.

मुद्रणस्थान: सर्वकान्त प्रिस, ४५१, कलाघाटी रोड, मुंबाई. २

ओ कह भाषामां हनां ? अनो पथु निर्णीत उड्डल मणतो नथी. डेट्लाक कहे छे के ते संशोधनभाषामां हनां अने हगणां ज्यां ज्यां पूर्वनी गाथाओनो उद्देश आवे छे त्यां अधे ए गाथाओ प्राइत भाषामां ज आवे छे. आवी डेट्लीये गाथाओ श्री जिनभद्र-गविष्टमाश्रमाणे जेताना विशेषवस्यकभाषामां उद्देशी छे अने व्याख्याकारों तेमने ‘पूर्वगत’ गाथा कहीने श्वेतांवेली छे, अटेक्ष जे पूर्वोनी भाषा भाटे ज भेदो विवाद-स्पृह प्रश्न छे त्यां तेनी शाहीना परिमाणु यर्ची केम चाली शके ? वली, एह धीज वात एवी छे के शाखामां पूर्व मां आवेला श्वेतांवेली संभ्या अतावेली छे त्यां एक्षी मांडीने चौहपूर्वना श्वेतांवेली संभ्या शाहीना परिमाणु येठे वधती नथी चाली. डाइमां अमुक श्वेतांवेली संभ्या अतावेल छे तो केहां एनाथी ज्ञाता श्वेतांवेली संभ्या पथु अतावेल छे. आ स्थितिमां लभ्या आटेनी शाहीतुं परिमाणु जे वधतुं चाल्युं अतावेल छे तेनी संगति केम थध शके ? श्वेतांवेल नामनो एक्ष छांद पथु छे अथवा ‘श्वेतांवेली अथ’ डेह पथु ‘पदमय इतिता’ एवो पथु अथ छे तो अहीं आ एमांथी गमे ते अथ लभ्यो, तो पथु शाहीतुं जे परिमाणु अतावेल छे ते धरी केम शके ? एन समझतुं नथी, एक हाथीतुं वजन ज्ञातामां ज्ञातुं चालीकाथी पचास भणु लभ्यो तो एटेक्ष वजननी शाही डेट्ली अधी थाय ? अने जे शाहीकी डेट्ला श्वेतांवेल लभ्य ? ए जेतां पथु. आ परिमाणु संगति केम डेट्ली ज्ञातुं नथी. जेवा पूर्व भाटे एक हाथीना वजन नेट्ली शाहीतुं परिमाणु अतावेल छे अने ज्येष्ठां पूर्व भाटे ११६२ हाथीना वजन नेट्ली शाहीतुं परिमाणु अतावेल लभ्यो तो ज्ञातामां लभ्यो वेहानुं सांगोपांग परिमाणु धालुं भेडुं छे. अथी वंचारे परिमाणु डेह शाखातुं नथी, तेने गाटे डेट्ली शाही ज्ञेहुओ ? जे विशेषो डेह उद्देश इन्हु सुधी ज्ञेह नथी. वली जे ज्ञानामां शास्त्रो लभानां न लतां, डेवण कंहाय रभातां हतां ते ज्ञानामां पूर्वो भाटे आ रीते शाहीतुं परिमाणु डेहपतुं ए डेट्लुं संगत छे ए वात पथु विचारणीय छे. डेहपतुं ए डेट्लुं ज्ञेह तेमने लभ्यो तो तेम तहनुसारे जैन-परंपरामां डेह भानुभावे आ ज्ञेह पूर्वोनी ज्ञाताना करी होय एम पथु डेह जैर कही शके. आग अनेक रीते विचारतां पूर्वोनुं स्वृहप, तेनां भाषा वजेरे निश्चिपणे इणी शधातुं नथी लेहां डेवण तेमने लभ्यो साझ शाहीना परिमाणु जेवा उद्देश डेट्लो योग्य छे ए तरस्थपत्रे विचारवा नेवुं छे. आवी निरग्रह अनहु अतिशयेकितपूर्वुं नेवधारा डेवण एट्लुं ज तारवी अनहु अतिशयेकितपूर्वुं नेवधारा एट्लुं ज तारवी रहाय के जैनपरंपरामां डेह पूर्व नामना अंयो हता अने ते धणु निशाण अने विपुल प्रभाणुओं हता. ज्यां सुधी आ भाटे धीज डेह समर्थक सामग्री न भणे त्यां सुधी डेह पथु संशोधन दृष्टिवाणो तरस्थ अव्यासी ए शाहीना परिमाणु वाणी नेवध उपरथा उपर कह्युं तेवुं ज अनुभान होरी शके. ए सिवाय धीज डेह कृपाना न कही शके अने शाहीना परिमाणुओं नांधने भारोभार अतिशयेकितपूर्वुं गानीने चाले.

आपणा अव्यासीओं संशोधनदृष्टि न होवाथी आनी अनहु अतिशयेकितपूर्वुं नेवेने लेहा अक्षरशः भरेखरी गानी लेहे अने एम गांता डेहती वासे जेताना शाख्योनी भहाता गाना ए शाहीना परिमाणुवाली नेवधने वा एवी ज धीज अलंकारभयी हड्डितने आराण के लेहे अने संभन्नार अलासी एनो पिण्डास इर्ची भिनाय धीजुं शुं करे ? अयवा एम पथु कहे जे आवी आवी हड्डितो अक्षरशः भरी ज होय तो पथु एवी जे आवी आवी हड्डितो अक्षरशः भरी ज होय तो पथु एवी भुर्तीप्यान जेवां पुस्तक पुराणाना पिण्डास गाटे जैनमुनिओं धूर्तीप्यान जेवां पुस्तक लभेलां छे तो आंवी आवी जेवा इणशानी अने लाथीप्रभाणु शाहीनी नेवधी भाटे धीजुं धूर्तीप्यान डेह ज लभी शके ? तारपर्य ए छे के संशोधनदृष्टि डेवणावा सिवाय अरो भरामां तारपर्य ए छे के संशोधनदृष्टि डेवणावा सिवाय अरो भरामां पमातो नथी अने ज्ञान वेहाय छे भाटे हड्डे मुमुक्षुओं वा अल्यासीओं संशोधनदृष्टि नेवधने लेही.

—पंडित ऐचरहास लवराज देशी